Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-12 | Jan-2015

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की स्थिति

म लंद पाटिल

सारांश:- भारत और पश्चिम के संदर्भ में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की स्थिति को देखें तो यह ज्ञात होता हैं क यहाँ पर्याप्त भन्नताएं हैं। चूं क आधुनिक काल में जहाँ अनुवाद के सैंद्धांतिक पक्ष और उसके स्वरूप पर व्यापक ज़ोर दिया गया, वहीं उत्तर आधुनिकता में वज्ञान एवं प्रौद्यो गकी के वकास के कारण अनुवाद के तकनीकी पक्ष और उससे जुड़े व भन्न उपागमों को महत्त्व दिया गया। इस कारण अनुवाद एक व शष्ट स्थिति पर पहुँच गया हैं। निरंतरता के साथ वज्ञान एवं प्रौद्यो गकी में हो रहे अनुसंधान एवं वकास के कारण अनुवाद पर भी इसका प्रभाव पड़ना लाजमी है।

प्रस्तावना :

अनुवाद परंपरा पर वचार कया जाए तो जब वैचारिक मंथन, वमर्श का दौर था तब अनुवाद की मौ खक एवं ल खत परंपरा कायम हो गई। परंतु जैसे ही वकास क्रम में आगे बढ़ते गए तब वज्ञान एवं प्रौद्यो गकी का सहारा लया गया। आधुनिक अनुवाद परंपरा में जहाँ अनुवाद सद्धांतों का वकास हुआ तकनीकी और गैर तकनीकी) (के लए, वहीं सद्धांतों का प्रयोग वैज्ञानिक रूप में भी होने लगा। 21 वीं सदी जहाँ मशीन से कार्य होता है, एक व्यक्ति मशीन के सामने बैठकर संपूर्ण मशीन को संचा लत करता है। यह सब हा सल हुआ है प्रौद्यो गकी के द्वारा और अनुवाद में भी प्रौद्यो गकी का सहारा लेकर अनुवाद कार्य करने का प्रयास जारी है। इस वषय में पश्चिमी राष्ट्रों में अनुवाद प्रौद्यो गकी नाम की एक वधा को ही शुरू कया गया जिसमें मशीनी अनुवाद के नाम से एक पाठ्यक्रम संचा लत कर एक स्त्रोत भाषा से दूसरी लक्ष्य भाषा में मशीन द्वारा याने कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद पाने का प्रयास चल रहा है। साथ ही यह अनुवाद ल खत रूप में और मौ खक रूप में हा सल करने का प्रयास चल रहा है। इस वषय में अभी तक यूरो पयन देशों की भाषा में परस्पर मशीनी अनुवाद पाने का 60 प्रतिशत लक्ष्य को

हा सल कया गया है। यह वाक्य को छोटे स्तर पर अनुवाद करता है। परंतु बडे वाक्यों को पश्च संपादन द्वारा मानव अनुवादकों ठीक करना पड़ता है। मशीनी अनुवाद यह एक जटिल प्र क्रया है। सामान्यतमानव अनुवाद की : तरह मशीनी अनुवाद यह कार्य नहीं कर सकता। जिसमें दो भाषाओं की संदर्भगत एवं नियमगत जानकारी कम्प्यूटर को देना पड़ता है और उसके अनुवाद नियम बना कर परिणाम को हा सल कया जाता है।

भारतीय परिदृश्य

भारत में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की स्थिति ठीक है। परंपरागत ज्ञान को नए रूप में रखा जा रहा है जिसमें अनुवाद का बड़ा ही योगदान है। भारत में अनुवाद की मौ खक एवं ल खत दो स्थितियाँ महत्वपूर्ण है। इन दोनों में से ल खत अनुवाद का कार्य संतोषजनक है। मौ खक अनुवाद का इतिहास न मलने के कारण इसे स्पष्ट करना कठिन है। भारतवर्ष यह भाषायी व वधता के लए जाना जाता है। भारत में जीतने भी भाषा परिवार है उनमें साहित्य एवं सामाजिक ज्ञान के साहित्य का अनुवाद बडे पैमाने पर हुआ है। साथ ही साथ ज्ञान वज्ञान एवं - पीछे है। प्रौद्यो गकी के अनुवाद मे अभी थोड़े

ज्ञान वज्ञान एवं प्रौद्यो गकी बात करें तो यह ज्ञान स-र्फ अंग्रेज़ी भाषा में उपलब्ध है और अभी तक इसी भाषा से ज्ञान को हा सल कया जा रहा है। भारत में ल खत परंपरागत ज्ञान यह संस्कृत, पा ल, द्र वड़ या अन्य भारतीय भाषाओं में है। परंतु भारत के बाहर का ज्ञान एक तो अंग्रेज़ी में है या उन देशों की भाषाओं में है जहाँ वह व्यापक तौर पर प्रयोग में लाई जाती है। इन भाषाओं में बसा ज्ञान अभी तक हमारी भाषा या भारतीय भाषाओं में बहुत कम प्रमाण में अनुवादित है। परंपरागत ज्ञान को छोड़ दिया जाए तो 21 वीं सदी की वज्ञान एवं प्रौद्यो गकी एक महत्वपूर्ण वषय है। वश्व में कसी भी देश का स्थान उनके आ र्थक प्रगति पर कया जाता है और आ र्थक वकास में ज्ञान वज्ञान-, प्रौद्यो गकी का महत्वपूर्ण स्थान है। वज्ञान एवं प्रौद्यो गकी एक ऐसा वषय है जो तकनीकी दृष्टि से वषय के साथ जुडी रहती है। तकनीक यह मशीन में हो सकती है या प्रयोगशाला में जहाँ वैज्ञानिक प्रयोग होते है। वैज्ञानिक प्रयोगों के सूत्रों की भाषा अंग्रेज़ी होती है और बड़ीबड़ी मशीनों के मैनुअल भी - न्य भारतीय भाषाओं में लाना अंग्रेज़ी या अन्य भाषाओं में होते हैं जहाँ उसका आ वष्कार होता है। इनको हिंदी या अ या अनुवादित करना ही आज बहुत बड़ा कार्य बन गया है। अगर इन कताबों को भारतीय भाषाओं में अनुवादित कया गया तो आ र्थक प्रगति में बड़ा ही योगदान हो जाएगा। वैसे तो आज के स्थिति में तकनीकी अनुवाद की स्थिति ठीक है। व भन्न अनुवाद एजं सयाँ अनुवाद कार्य कर रही हैं। भारत में व भन्न वश्व वद्यालयों और निजी भाषा एजं सयों द्वारा अनुवाद पाठ्यक्रम के प्रोग्राम चला रही हैं। जिसमें अनुवाद को बड़ा ही फायदा हो रहा है। अनुवाद एजं सयाँ जगहण कंपनी और जगह खुल जाने के कारण और सूचना प्रौद्यो गकी के साथ जुड़ जाने के कार- उपभोक्ता को घर बैठे सहु लयत मल रही है।

भारत में वैसे तकनीकी अनुवाद की स्थिति ठीक है परंतु नित नए हो रहे आ वष्कार और प्रौद्यो गकी की खोज ने अनुवाद की मांग बढ़ा दी है। आए दिन देखा जा रहा है क मशीनों में नित्य नए बदलाव हो रहे हैं। इन बदलाव को सहजने के लए उस मशीनों का साहित्य याने मैनुअल उस भाषा में होता है जहाँ वह तैयार की जाती है। उन मैनुअलों को स्थानीय भाषा में लाना कंपनी का प्रथम कार्य होता है जिसमें उनको लाभ ही है। लाभ यह होता है क मशीनों की बिक्री बढ़ जाती है और मैनुअल उसकी अपनी भाषा में होने के कारण मशीन आपरेटर को

भी मशीन संचा लत करने में सु वधा होती है। जिससे उसका कार्य अबा धत रूप से आगे बढ़ता है। तकनीकी अनुवाद की यही महत्वपूर्ण बात है। वैसे तो तकनीकी अनुवाद में शब्द के अर्थ को ही महत्वपूर्ण माना जाता हैं वहाँ भाव परक भाषा की कोई गुंजाईश नहीं होती। यह पूर्ण रूप में तकनीकी होता है न क भाव प्रधान या सौंदर्य प्रधान। इस अनुवाद के शब्द के अर्थ शब्दकोशों में मल जाते है जहाँ उसका स्पष्ट अर्थ होता है। इसी कारण इस अनुवाद में आसानी भी है और कठिनाई भी। समस्या यह वाक्य की संरचना में होती है। अनुवाद यह लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार कया गया तो यह समस्या बड़ी नहीं है। वैसे तो अनुवाद की सभी स्थिति में समस्याएँ तो हैं परंतु इसका समाधान भी है।

साहित्यिक अनुवाद की स्थिति भारत में ठीक है। भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद हो रहे है और वदेशी साहित्य में भी बडे पैमाने पर अनूदित कृतियाँ बाज़ार में आ रही है। फल्म के क्षेत्र में तो अनुवाद कार्य बहुत ही बडे पैमाने पर हो रहा हैं। वदेशी और भारतीय फल्मों का परस्पर एक दूसरी भाषा में डबिंग का कार्य हो रहा है। इस कारण रोज़गार और कला को बढ़ावा मल रहा है। इस क्षेत्र में अनुवाद की स्थिति ठीक है। मल जुलकर भारत में सभी वधाओं में अनुवाद की स्थिति ठीक है।

पश्चिमी परिदृश्य

पश्चिमी परिदृश्य में अनुवाद की स्थिति बहुत ही अच्छी है। यहाँ प्रौद्यो गकी को बहुत पहले प्रयोग में लाने के कारण अनुवाद एक व शष्ट स्तर पर पहुँच गया है। इससे पहले की गई चर्चा के अनुसार प्रौद्यो गकी का आ वष्कार एवं वकास पश्चिमी राष्ट्रों में ही हुआ। इस आ वष्कार का प्रयोग उन्होंने अपनी भाषा पर कया जिस कारण आज इंटरनेट पर यूरो पयन भाषा में परस्पर अनुवाद इंजन दिखाई देते हैं। यह अनुवाद 100 प्रतिशत परिपूर्ण नहीं होता परंतु पश्च संसाधन से इसे सही रूप दिया जाता है। इसमें सर्फ तकनीकी अनुवाद ही संभव है। साहित्यिक या भाव प्रधान साहित्य के अनुवाद के लए यहाँ स्थान नहीं है। साहित्यिक या भाव प्रधान साहित्य के लए यहाँ व भन्न एजन्सीयाँ कार्य करती है। पश्चिमी राष्ट्रों में अ धकतर देशों की भाषा अंग्रेज़ी होने के कारण ज्ञान वज्ञान और प्रौद्यो गकी की भाषा अंग्रेज़ी से समस्या न-हीं है। ऐसे ही कुछ देश है जहाँ अंग्रेज़ी मातृभाषा नहीं है परंतु द् वतीय भाषा के रूप में अंग्रेज़ी है या संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है। वैसे तो यूरोपीय देशों का अपनी परस्पर भाषा समझने में कठिनाई नहीं होती। बहुत सी भाषाओं में समानता दिखाई देती है। इस कारण अनुवाद या अन्य संप्रेषण में भी समस्याँ नहीं होती। वैसा देखा जाए तो मानव अनुवाद एवं मशीन अनुवाद की स्थिति में भारत से पश्चिमी राष्ट्र आगे ही है। क्यों क वे वक सत देशों की श्रेणी में आते है वहीं भारत यह वकासनशील देशों की श्रेणी में आता है। पश्चिम में ज्ञान के आ वष्कार से लेकर प्रयोग और संप्रेषण में तो परिवर्तन है, वह बहुत ही उच्च कोटि का है। इस कारण अनुवाद का भी क्षेत्र यह अछुता न रहते हुए वहाँ भी कार्य प्रगति पर है। नित नए बदलाव एवं प्रयोगों में पश्चिमी देश आगे ही है।

अत :भारत जैसे राष्ट्र में मानव सा धत अनुवाद में यथासंभव बदलाव अपे क्षत है। पुरातन पध्दतियों का अंधानुकरण न करते हुए नवीन तकनीकों और व धयों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया जाना चाहिए। उसी तरह मशीन सा धत अनुवाद के लए नए सॉफ्टवेयर, उपकरण आदि को आ वष्कार करते हुए दक्षता हा सल करना समय की माँग है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Anderman, Gunnila. & Rogers, Margaret. Translation Today Trends and Perspective, 2003, Multilingual Matters Ltd. United Kindom.
2. Bassnett, Susan. Translation Studies, 2002 Third Edition, Rutledge, New York.
3. Bell, Roger T.: Translation and Translating; Theory and Practice, 1991, Longman Inc., New York.
4. Catford, J. C.: A Linguistics Theory of Translation, 1965, Oxford University, 11. London. Nair, Sreedevi K. : Aspect Of Translation, 1996, Creative Books, New Delhi.
5. अय्यर, एन.अनुवाद भाषाएँ समस्याएँ/ वश्वनाथ.ई.**1992,** ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली।
6. डॉकलवार ., कशोरीलाल2009.अनुवाद परंपरा एक अनुशीलन हिन्दी/ नवभारत प्रकाशन, दिल्ली।
7. डॉ संह ., राम गोपाल2003.अनुवाद की परंपरा/ वनय प्रकाशन, अहमदाबाद।
8. डॉ संह ., राम गोपालअनुवाद वज्ञान/ स्वरूप और समस्याएँ।2009/ साहित्य संस्थान, गाजियाबाद।